शिक्षक मूल्यांकन-एक विद्यार्थी का नजरिया

ऐश्वर्या किरित

किसी भी तन्त्र में शिक्षक मूल्यांकन का उद्देश्य यही है कि कक्षा में सुधार लाया जाए एवं शिक्षक के विकास को बढ़ावा दिया जाए। शिक्षक का मूल्यांकन करने के स्वीकार्य मानदण्डों में विद्यार्थी का अकादमिक विकास व अंक तथा शिक्षण की गुणवत्ता के साथ-साथ शिक्षक का कक्षा के साथ सम्बन्ध भी आ जाता है। एक बहुत ही उच्च शिक्षा प्राप्त शिक्षक का भी उच्च मूल्यांकन किया जा सकता है।

अगर कोई मुझे एक जाँच सूची सौंपकर मुझसे कहता कि मैं अपने शिक्षकों को उसी तरह से जाँचकर अंक दूँ जैसे वे मुझे परीक्षाओं में अंक देते हैं, तो मैं इस अवसर को कतई हाथ से न जाने देती। और फिर मैं उस कागज को हाथ में लेकर उलझन में पड़ी रहती।

60 विद्यार्थियों की कक्षा में कोई भी विद्यार्थी किसी शिक्षक का मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ तरीके से कैसे करे?

क्या यह विषय के प्रति शिक्षक का जुनून है या उनकी शैक्षिक योग्यता?

एक लम्बे समय तक मैं यह सोचती थी कि "अच्छा" शिक्षक वह है जो हाथ में पाठ्यपुस्तक लिए बिना पढ़ाए, ऐसा व्यक्ति जो इतना ज्ञानी हो कि जैसे ही वह कक्षा में आए वैसे ही उसका जादू चल जाए। पर अब समझ में आता है कि चुनौती सिर्फ विषय को अच्छी तरह से जानने में नहीं बल्कि उसे पढ़ाने में है।

कक्षा छह में मेरे अँग्रेजी साहित्य के शिक्षक जाहिरा तौर पर विषय से प्यार भी करते थे और उसी जुनून के साथ उसे पढ़ाते भी थे। मुझे उनकी आवाज में टेनिसन की "Brook" व मार्क ट्वेन की "टॉम सॉयर" का पठन अभी भी याद है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ा कि उन्होंने अन्य शिक्षकों के जितनी उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं की थी क्योंकि अन्य किसी शिक्षक ने ऐसी छाप नहीं छोड़ी जो आठ सालों तक बनी रहे।

क्या हम शिक्षक का मूल्यांकन इस आधार पर करें कि वे विद्यार्थी पर कितना ध्यान देते हैं? सिर्फ उस विद्यार्थी पर ही नहीं जो बहुत अच्छे अंकों से सफल होता है, बल्कि उन पर भी जो कमजोर हैं और कम प्रेरित हैं? अगर ऐसा है तो मेरी आठवीं कक्षा के गणित के शिक्षक अव्वल नम्बर पर आएँगे। गणित को लेकर मैं कभी इतनी प्रेरित नहीं हुई कि उस पर ज्यादा मेहनत करूँ। पर वे मेरे साथ बैठे, मुझे सजा दी, मुझ पर दबाव डाला और यह बात सुनिश्चित की कि साल के अन्त तक मैं गणित में रुचि लेने लगूँ।

और फिर नवीं कक्षा में मेरी यह रुचि एक अनुभवी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त शिक्षिका द्वारा नष्ट कर दी गई। उनकी अंकों की ओर उन्मुख व तेज गति वाली शैली का उद्देश्य था पाठ्यक्रम को पूरा करना न कि यह कि कक्षा को अवधारणा समझने का समय दिया जाए। इस वजह से आठवीं कक्षा वाला मेरा अनुभव बिलकुल बर्बाद हो गया।

स्कूल में शिक्षक को फीडबैक देने का प्रश्न ही नहीं उठता था, उनकी कही हुई बात कानून होती थी और कोई भी उनसे उनकी शिक्षण शैली के बारे में कुछ नहीं कह सकता था। जो कोई भी पारम्परिक भारतीय स्कूलों में पढ़ा है, उसके लिए शिक्षक मूल्यांकन एक विदेशी अवधारणा है, जहाँ शिक्षक के मूल्यांकन को करीब-करीब निन्दनीय ही माना जाता है। पर मैं यह मानती हूँ कि यह देश भर के शिक्षकों के लिए ऐसी चेतावनी हो सकती है, जिसकी उन्हें जरूरत है।

और "शिक्षक मूल्यांकन" जैसे कल्पित शब्द हमारी दुनिया में थे ही नहीं । लेकिन अब जब ये शब्द मौजूद हैं तो मुझे इस बात को लेकर शंका है कि जिस कक्षा में 60 + विद्यार्थी हों, वहाँ 15 वर्षीय किशोर वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन कर पाएँगे।

यह बात तो साफ है कि शिक्षकों के पास जरूरत से ज्यादा काम है और यह भी कि भले ही कक्षा में विद्यार्थियों की क्षमताएँ कैसी भी हों, शिक्षकों पर पाठ्यक्रम पूरा करवाने का बोझ होता है। इस परिदृश्य में एक "अच्छा" शिक्षक वह है जो बच्चों को उच्चतम अंक दिलवा सके और जिस देश में अंक आपके भविष्य को बना या बिगाड़ सकते हों, वहाँ तो यही बात सबसे तर्कसंगत लगती है। अब यह प्रणाली नए तरीकों, पाठ्यपुस्तकों, सी.बी.एस.सी. व राज्य के पाठ्यक्रमों के विलयन के साथ बदल रही है तो शिक्षकों से भी यह अपेक्षा की जाती है कि वे भी समय के साथ आगे बढ़ें और नए व अलग प्रकार की कक्षाओं की जरूरतों को पूरा करें।

किसी भी मूल्यांकन प्रणाली को इस तरह से बनाना चाहिए कि उसमें विशाल कक्षा कक्ष, विभिन्न भाषा कौशल एवं शिक्षक के कार्यभार को समायोजित किया जा सके। शिक्षक मूल्यांकन एक बढ़िया अवधारणा है, शैक्षिक स्तरों को सुधारने का मार्ग है और प्रभावकारी फीडबैक प्रणाली के निर्माण का तरीका है बशर्ते कि हम हर प्रकार के शिक्षक का मूल्यांकन वस्तुनिष्ठ रूप से करें।

***ऐश्वर्या किरित** : ऐश्वर्या माउण्ट कार्मेल कॉलेज, बंगलौर में कम्यूनिकेशन स्टडीज के दूसरे वर्ष की छात्रा हैं। उनसे aishwaryakirit@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल*

